चन्द्रभानु सिंह

चन्द्रभानु सिंह मैथिलीक नामी कवि छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक नदियामी गाममे भेल छनि। जन्मतिथि छनि । मार्च, 1922 ई०। स्कूलमे अध्यापक छलाह, आब सेवा-निवृत भऽ पूर्णत: साहित्यसेवा करैत छथि। स्वदेश भारती, के ई गीत अलापै छै तथा शकुन्तला (महाकाव्य) हिनक मैथिली काव्य-पुस्तक थिक। हिन्दीमे सेहो हिनक कविता-पोथी प्रकाशित छनि। शकुन्तला महाकाव्य पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि।

मैथिलीक लोकप्रिय गीतकार आ कवि चन्द्रभानु सिंह लोकधर्मी रचनाकार छथि। मैथिली गीतक लोकधुन, लोक-रुचि आ लोक - भाव हिनक रचनाक मुख्य विशेषता थिक। मूलत: ई गीतकार छथि, गायक छथि। कवि सम्मेलनक मंचसँ हिनक गीत सुनि श्रोता मुग्ध भऽ जाइत अछि।

काव्य सन्दर्भ - एहिठाम हिनक जे गीत संकलित अछि से अति सामयिक विषय पर केन्द्रित अछि। एड्स अत्यन्त खतरनाक बीमारी अछि। ओहि जानलेवा रोगसँ बचब प्रत्येक युवक-युवतीक लेल जरूरी अछि। तेँ कवि आमलोकक भाषामे आमलोककेँ आजुक कालखण्डक कालनागसँ बचबाक चेतौनी दैत छथि।

एड्सक कालनाग

एड्सक कालनाग उतरल छै सिंधुक कतबय सँ घूसल।
कतऽ सँ ढूकल स्वदेश मे, दिशा-दिशा सँ गरजै छे ।।
आबै छै कम्पायमान भूकम्प आ कि सागरक लहर,
पाराद्वीपक कालरात्रि की करगिल केर विकराल पहर।
ऐटम बमसँ बढ़ि विभीषिका, आइ मनुज -कुल सिरजै छै ।। ।।। कतऽ सँ

एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक अचेत पड़ल घर मे,
बूझि ने पड़य मुसीबत केर ढब, संचमच मरचर घर मे,
महादैत्य केर घ्राण साँस आ शोणित मे घुसि कुचैर छै।। 2।। कतऽ सँ

सिफलाहा सब परदेश जा-जा, पाप कमा' घर मे लाबय,
ढाहै वंशक भीत, कुटुम आ अपनहु घर बेबुझ घालय।
छूतक रोग ग्रसय बाघिन सन, अनदेखे दुख सिरजै छै ।। 3 ।। कतऽ सँ

डूबत देश जाहि कुत्सा सँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।
चेतह बाल-युवा- नवतुर-जन, मोनक मीत चेताबै छै ।। 4।। कतऽ सँ

क्यो की बूझय ककर रक्त मे, विषकेर पुड़िया छै राखल,
महाकाल ककरा सिर उतरत, ककर मृत्यु रग मे झाँपल।
मीतो सँ बचि रहिहऽ मीता मोनक मीता बरजै छै ।। 5 ।। कतऽ सँ

हड़विर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै ।। 6।। कतऽ सँ

शब्दार्थ

मनुज	:	मनुक्ख
भीत	:	डरायल
कम्पायमान	:	कम्पित करयबला
विभीषिका	:	भीषण भय
सिफलाहा	:	सिफलिस रोगसँ ग्रसित
मीता	:	मित्र
सहस्त्राब्द	:	हजार वर्ष
निरघिन	:	घृणित
कालनाग	:	समय - साँप, खतरनाक समय
बरजै	:	रोकै, मना करै।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) एड्सक कालनागक कवि छथि-

(क) चन्दा झा (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) बुद्धिनाथ मिश्र (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

(i) एड्सक कालनागसँ रक्षाक लेल ककर आवश्यकता अछि।

(क) धन (ख) बल

(ग) चरित्र (घ) बुद्धि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक ..... घरमे।

(ii) चेतह बाल-युवा नवतुर-जन ..... चेताबैछै।

3. निम्नलिखितमे सँ शुद्ध / अशुद्धकेँ निर्दिष्ट करू :

(i) सिफलाहा सब कोलकाता जा पाप कमा' घर अनैत अछि।

(ii) एड्स एटम बमसँ विशेष खतरनाक अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्स केहन रोग अछि ?

(ii) एड्सक विभीषिका केहन अछि ?

(iii) एड्सक कारण की अछि ?

(iv) कोन व्यक्ति एहि रोगसँ निडर रहैत अछि ?

(v) एड्सक प्रसारक कारण की अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्सक प्रसारक कारणक उल्लेख करू ।

(ii) एड्सक बचावक उपाय बताउ।

गतिविधि-

1. छात्रकेँ अपन आचार-विचार केहन रखबाक चाही तकर आपसमे चर्चा करथि।
2. छात्र लोकनि वर्गमे भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।
3 छात्र एड्स निरोध सम्बन्धी नारा तैयार करथि।

4. निम्नलिखित पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) डूबत देश जाहि कुत्सासँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।

(ii) हड़बिर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रलोकनिकेँ एड्सक कारण, लक्षण ओ निदान बताबथि।
2. एड्सक कारणेँ कोनो एक परिवारक सर्वनाश भऽ गेलनि अछि, शिक्षक उल्लेख करथि।
3. छात्रलोकनिकेँ एड्स पर आधारित गीतक चुनाव कऽ वर्गमे शिक्षक सस्वर गबाबथि।
4. एड्स सम्बन्धी नारासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।